कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम।
यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम।। ४२ ।।

संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ जिसने अपने आत्मा को भवसागर से पार निकाला हो, ऐसा सब शास्त्र और वेद कहते हैं।

सो वैराट चौदे तबकों, थावर और जंगम।
सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम।। ४३ ।।

रसूल साहब ने तारतम वाणी के उजाले तथा धनी के हुकम से चौदह लोकों के चर और अचर जीवों की बहिश्त में कायमी कराई।

खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फुरमान।
आखिर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान।। ४४ ।।

यह खेल राजजी के हुकम से बना जिसमें रसूल साहब कुरान लेकर आए। आखिरत में भी रसूल साहब इमाम मेंहदी के साथ आकर सारी दुनियां को बहिश्तों में कायम करेंगे।

भिस्त चौदे तबक, देसी दुनियां दीन।
देसी ब्रह्मा रुद्र नारायन को, आखिर दे आकीन।। ४५ ।।

चौदह तबकों के लोगों को बहिश्तों में कायम करेंगे तथा बाद में ब्रह्माजी, शंकरजी और नारायणजी को भी पहचान कराके, यकीन दिलाकर अखण्ड करेंगे।

ए अव्वल का हुकम, आखिर होसी जाहेर।
करसी साफ सबन को, अंतर मांहें बाहेर।। ४६ ।।

यह खुदा का पहले का ही हुकम है जो अब आखिरत में जाहिर होगा। इससे सारी दुनियां अन्दर और बाहर से पाक साफ हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ८७० ।।

सनन्ध–दोजख की

नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान।
ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिल में आन।। १ ।।

दोजख की अग्नि में काफिर लोग कैसे जलेंगे? रसूल साहब के वचनों के अनुसार इसको थोड़ा-सा बताती हूं। इसे तुम दिल में धारण करना।

कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास।
पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विश्वास।। २ ।।

इस वाणी से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड का कुफ्र मिट जाएगा, किन्तु मैं उन अगुओं (धर्माचार्यों) को क्या कहूं जिन्होंने संसार के साथ विश्वासघात किया है (जिन्होंने धनी का सीधा रास्ता नहीं बताया)।

कुफर सारा काढ़सी, एक पलक में धोए।
खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए।। ३ ।।

सारी दुनियां का कुफ्र एक पलक में धुल जाएगा। कुफर और अज्ञानता को तारतम के ज्ञान से निर्मल कर ईमान और इश्क की धूप में निर्विकार बना देंगे।

Nijanand App

याही दोजख अगनी जलें, और जलें दुनी के दम।
आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूले हम।।४।।

संसार के अगुए इस तरह से दोजख की आग में जलेंगे। दुनियां की हाय तोबा इनको खाएगी। अपनी करनी भी इनको खाएगी। तब पश्चाताप करेंगे कि हम भूले थे।

खुदा न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर।
पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर।।५।।

धनी किसी को भी दुःख नहीं देते। हर कोई अपने कर्मों से ही मरते हैं। कजा के दिन ऐसे लोग सिर पीट-पीटकर रोएंगे। चाहे वह राणा हो, राजा हो या फकीर हों।

खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर।
सो सोर याद जो आवहीं, हाए हाए झालें बढ़े त्यों जोर।।६।।

रसूल साहब ने आकर खूब पुकारा कि कजा के वास्ते खुदा खुद आकर काजी बनेगा। रसूल साहब की इस वाणी को याद कर उनकी आग की लपटें और बढ़ जाती हैं।

जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बड़ा खसम।
कलमा रसूल का सुन के, हाए हाए पकड़े नहीं कदम।।७।।

पश्चाताप की अग्नि में जलने के बाद उनको खुदा की पहचान होगी और फिर रसूल का कलमा (तारतम वाणी) सुनकर कहेंगे कि हाय-हाय हमने बड़ी भूल की जो इनके कहने पर रहनी में नहीं आए।

ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख।
ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख।।८।।

जैसे-जैसे दूल्हा (स्वामी) श्री प्राणनाथजी की पहचान होगी, वैसे-वैसे वह दुःखी होंगे। ऐसे मेहरबान श्री प्राणनाथजी के सामने जाकर हमने दर्शन क्यों नहीं किए।

खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं आकीन।
अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।९।।

रसूल साहब ने खुदा के आने की खबर बताई थी, पर किसी को यकीन नहीं आया। अब मत्थे को (सिर को) जमीन पर मार-मार कर कहेंगे कि हमसे बड़ी भूल हुई जो हमने वाणी से पहचान नहीं की।

एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटा फंद।
दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए हुए बड़े अंध।।१०।।

रसूल साहब ने इतना पुकार-पुकारकर कहा, फिर भी माया का फन्द नहीं छूटा। अब जबान को दांतों के बीच काटकर कहेंगे कि हाय-हाय हम अन्धे हो गए थे।

जाए जाए समसेर लेवहीं, अब कीजे आप घात।
दिल दे कबहूं ना सुनी, हाए हाए पैगंमर की बात।।११।।

तब अपने आपको मारने के लिए तलवार उठाएंगे और कहेंगे हाय-हाय हमने पैगम्बर रसूल साहब की बात नहीं सुनी (वाणी कभी नहीं पढ़ी)।

ले ले छुरी पेट डारहीं, आकीन न आया अंग।
कही बात नबिऐं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग।।१२।।

छुरी लेकर पेट काटेंगे और कहेंगे कि हमें कभी यकीन नहीं आया। नबी (रसूल) ने तो अपनी पहचान कराई, पर फिर भी हमने उनको नहीं पहचाना।

Nijanand App

बात न सुनी रसूल की, तिन सीखां लगियां कान।
इस्क हक का छोड़ के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान।। १३ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी नहीं सुनी उनके कानों में गरम सलाखें डाली जाएंगी। वह पश्चाताप करेंगे कि हमने अपने ज्ञान की चतुराई में हक के इश्क को छोड़ दिया।

बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध।
सो गुन अंग इन्द्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध।। १४ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी को लापरवाही से सुना, वह पश्चाताप करेंगे कि हमारी गुण, अंग, इन्द्रियां और बुद्धि भी जल जाएं।

आकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन।
और विचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन।। १५ ।।

जिनको श्री प्राणनाथजी की वाणी सुनकर यकीन नहीं आया, वह पश्चाताप करके अपने विचारों और चतुराई को हाय-हाय करके ज़लाएंगे।

धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत।
सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बड़ी हरकत।। १६ ।।

ऐसे गुरुओं को धिक्कारेंगे जिन्होंने उलटा ज्ञान सुनाकर बुद्धि को उलटा दिया था। ऐसे अगुओं को पहचान कर हाय-हाय करके सभी धिक्कारेंगे।

बिना आकीने इस्क, कबहूं न उपज्या किन।
स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन।। १७ ।।

बिना यकीन के किसी को भी इश्क नहीं आता है। सयानों (ज्ञानियों, गुरुओं) के ज्ञान की चतुराई की हाय-हाय करके उनको धिक्कारेंगे कि इन्होंने ही सारी खराबी की है (इन्होंने ही बेड़ा गर्क किया है)।

मैलाई न छूटी मन की, ऊपर भए उज्जल।
न आया आकीन रसूल पर, हाए हाए छेतरे छल।। १८ ।।

इनके मन की मैल नहीं छूटी। ऊपर के नहाने से क्या होता है? इनको श्री प्राणनाथजी पर यकीन नहीं आया, इसलिए यह भी इस माया के संसार में ठगे गए। यह हाय-हाय करके पश्चाताप करेंगे।

हराम न छूट्या दिल से, छल दृष्ट हुई बाहेर।
राह भूले मुस्लिम की, हाए हाए बुरी हुई जाहेर।। १९ ।।

इनके दिल से कपट नहीं छूटा और बाहरी नजर भी माया से भरी है, इसलिए यह मोमिनों की रहनी को भूल गए। फिर हाय-हाय करके पश्चाताप करेंगे कि हमसे बुरा हुआ।

ख्वाब के सुख कारने, किया आपसों छल।
सब्द ना सुने रसूल के, हाए हाए खाएं गोते बिना जल।। २० ।।

सपने के सुख के लिए हमने अपने आप से कपट किया। हमने श्री प्राणनाथजी की वाणी को नहीं सुना, इसलिए बिना जल के भवसागर में गोते खाएंगे।

सब्द जो अगुओं सुन के, भूले मुस्लिम की राह।
इन दीन कलमें आखिर, आवसी इत खुदाए।। २१ ।।

इन अगुओं (गुरुओं, ज्ञानियों, धर्माचार्यों) के वचन सुनकर जो मोमिनों की रहनी भूल गए और इन वचनों को भी भूल गए कि आखिरत को खुदा खुद आएगा।

Nijanand App

कुरान जिनों न विचारिया, जलो सो तिनकी मत।
जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत।। २२ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी की वाणी को नहीं सुना उनकी बुद्धि को धिक्कार है। जो उनके हुकम से जागृत नहीं हुआ, आग लगे उनकी लापरवाही को।

बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल।
आखिर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल।। २३ ।।

आखिरत में (प्राणनाथजी के जाहिर होने के बाद में) वह लोग न उठ सकेंगे न बैठ सकेंगे, न लेट सकेंगे, उनको पश्चाताप की अग्नि में ही जलना होगा।

जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसल्मीन।
हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।। २४ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी को नहीं पहचाना, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या संसार का कोई भी हो, वह हाथ काटेंगे, छाती पीटकर कहेंगे कि हाय-हाय हमने बड़ी भूल की।

सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल।
तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्यों ए झाल।। २५ ।।

श्री प्राणनाथजी ने तो सीधा रास्ता बताया, परन्तु दुनियां के मूर्ख नहीं समझ सके। अब उनके अंग में पश्चाताप की आग लगेगी और हाय-हाय करके रोएंगे।

खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर।
सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर।। २६ ।।

अब वह श्री प्राणनाथजी के आगे सिर उठाकर कैसे देखेंगे? क्योंकि उस समय उनके सारे अंग पश्चाताप की अग्नि में जल रहे होंगे और वह हाय-हाय कर रहे होंगे।

देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नांहें।
पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल मांहें।। २७ ।।

काफिर लोग (अज्ञानी) यदि आग में जलते हैं तो बड़ी बात नहीं पर तारतम वाणी समझ आ जाने पर भी जो भूल करेंगे, हाय-हाय वह अन्दर ही अन्दर अपने दिल में जलेंगे।

कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन।
तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन।। २८ ।।

जिन्होंने वाणी को बार-बार पढ़ा और उसकी हकीकत को नहीं जाना और उनको धनी प्यारे नहीं लगे, उनको यह जमीन आग के समान लगेगी।

कई महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे।
तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जले ए।। २९ ।।

जो श्री प्राणनाथजी के साथी कहलाते हैं और दिल से उनकी पहचान नहीं की तथा वाणी के रहस्य को नहीं समझा, हाय हाय यह जान बूझकर आग में जलेंगे।

कलाम अल्ला आया हाथ में, पर मारफत न पाई किन।
सो भी आग छोड़े नहीं, हाए हाए तांबा जिमी हुई तिन।। ३० ।।

अक्षरातीत की वाणी मिली थी, पर मारफत, (वाहेदत और खिलवत) को प्राप्त नहीं किया। उनको भी यह आग नहीं छोड़ेगी। यह जमीन उनको गर्म लोहे की तरह जलाएगी (लगेगी)।

Nijanand App

जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर।
सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बेडर।। ३१ ।।

जो जान बूझकर भूल करते हैं और धनी के वचनों पर नहीं चलते, उनको आग के ऊपर सूली पर उल्टा चढ़ाया जाएगा। तब हाय-हाय करके रोएंगे कि हम धनी से क्यों नहीं डरे?

दुस्मन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे।
सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए।। ३२ ।।

सबके दिल पर बैठा शैतान (अबलीस, नारद) तो सबको जलाना ही चाहता है। वह जाहिरी रूप से फरेब (छल) करके धोखा देता है। पर हाय, उसे कोई पहचानता नहीं।

पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए।
इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए।। ३३ ।।

जब दोजख की आग लग जाएगी तब पीछे पछताने से क्या होगा? इस वास्ते श्री प्राणनाथजी कृपा करके पहले से ही सावचेत (सावधान) कर रहे हैं।

यों आखिर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान।
तब कहें ए सुध सुनी हती, पर आया नहीं ईमान।। ३४ ।।

इस तरह आखिरत के समय में श्री प्राणनाथजी की पहचान हो जाएगी और तब सब कहेंगे कि हमने वाणी सुनी तो थी, परन्तु हमको ईमान नहीं आया।

सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल।
सो दोऊ जाहेर किए, सांचा दीन झूठा छल।। ३५ ।।

इस संसार में सच्चे (ब्रह्मसृष्टि) और झूठे (माया के जीव) दोनों मिल गए थे। अब दोनों को जाहिर कर दिया कि सच्चा (सुन्दरसाथ) और झूठा छल (माया का जीव) क्या हैं।

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ९०५ ॥

सनन्ध–अगुओं ग्यानी की

अब नींद उड़ी सबन की, आई जो हिरदे बुध।
समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि अब संसार के सब ज्ञानी और अगुओं को ज्ञान मिल गया है। उनकी अज्ञान की नींद उड़ गई है। अब सभी कुरान को समझेंगे, क्योंकि श्री प्राणनाथजी की पहचान हो गई है।

अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सब्द रसूल।
इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल।। २ ।।

अब नबी (रसूल) और कुरान के शब्द सबको प्यारे लगने लगे हैं, क्योंकि अब इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) जाहिर हो गए हैं। सब आकर उनके चरणों में सिजदा करो।

अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान।
ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान।। ३ ।।

जब पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी स्वयं आकर बैठ गए तो रसूल साहब की और कुरान की सब हकीकत का ज्ञान मिल गया।

Nijanand App